सत्य एँव अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

मई-जून, 2001

'यीशु की योजना और उद्देश्य - हमारे जीवन की बुलाहट।'

'निर्गमन ३-१० - इसलिए अब आ, मैं तुझे फिरौन के पास भेजूंगा, जिससे कि तू मेरी प्रजा अर्थात् इस्राएलियों को मिस्र से निकाल ले आए।'

परमेश्वर एक मनुष्य की खोज में है, एक उपयुक्त मनुष्य की। इस्राएल के वंश में, मूसा सबसे अधिक आशीषित था। उसका पालन-पोषण एक धार्मिक परिवार में हुआ और उसकी शिक्षा राजघराने के राजकुमार की। परमेश्वर ने इस्राएलियों की आह सुनी। उन्हें छुड़ाने के लिए वह एक व्यक्ति को भेजना चाहता था। लेकिन मूसा मिस्र को लौटने से मना कर रहा था।

परमेश्वर मेल-मिलाप की और बढ़ रहा है। परमेश्वर कहता है, 'मैं ही सब कुछ करूँगा। तू केवल मेरे स्थान पर खड़ा रह।' लेकिन हम उसका विरोध करते हैं। सामर्थ और बुद्धि हमें परमेश्वर की ओर से ही मिली है। तुम्हारा शरीर और दिमाग परमेश्वर की भेंट हैं। परमेश्वर ने हम में से हरेक को एक खास प्रशिक्षण दिया है। जब तुम अपने बीते हुए जीवन को देखते हो तो आश्चर्य करते हो कि मृत्यु के इतने पास होने के बावजूद तुम मरे क्यों नहीं। कईयों की मौत हुई, लेकिन तुम जीवित बचे रहे। दुष्टों के साथ तुम्हारा नाश क्यों नहीं हुआ? परमेश्वर का दिव्य हाथ तुम्हारे पीछे था, जैसे मूसा के पीछे। तुम्हारा शरीर, दिमाग और आत्मा एक विस्तार जमीन की भाँति है, जिसे परमेश्वर उपयोग में लाना चाहते हैं। मूसा, परमेश्वर द्वारा दिये गए काम को करने में आनाकानी कर रहा था। दुःखी होकर अपने सिर को झुकाये, अधिकतर परमेश्वर को हमसे पीछे हटना पड़ता है, क्योंकि हम उससे तालमेल नहीं बैठाना चाहते। परमेश्वर मूसा से कहते हैं, 'तेरे माता-पिता के घर में मैंने तेरा ध्यान रखा, राजमहल में मैं तेरे साथ रहा, तेरे जीवन को खतरों में सुरक्षित रखा, तुझे पाप से बचाए रहा। मैंने तेरे जीवन को बचाये रखा जबकि फिरौन(मिस्र देश का राजा) तेरी हत्या करना चाहता था। मैंने तुझे पत्नी दी और

शांतिप्रिय ससुर दिया। अग्नि में मैंने तुझे दर्शन दिया। उस अग्नि द्वारा तू तैयार हो चुका है। लेकिन मूसा फिर भी नहीं मान रहा था। क्या ऐसी ही परिस्थिति हमारे जीवन में नहीं आती? संसार में कितने ही लोग हैं, जो गलत विचारधाराओं और धोखे वाले धर्म के नीचे दबे हैं, जो कि मुक्ति नहीं देता। परमेश्वर कहता है कि तुम उसके सहकर्मी हो। बचपन के दिनों से परमेश्वर ने तुम्हारी देखभाल की है ताकि परमेश्वर के गुण जोकि उसने तुम्हारे अन्दर डाले हैं, वह फलें-फूलें और तुम्हारे आसपास के लोगों को लाभ पहुँचाएँ। परमेश्वर ने तुम्हारी देखभाल की है और तुम्हें अनेक अनुभव दिये हैं, उन अनुभवों ने तुम्हें उसकी सेवा के लिए तैयार किया है। जिसने हमें सब कुछ दिया है, वह परमेश्वर हमसे विनती कर रहा है। तुम्हारा स्वस्थ शरीर परमेश्वर की भेंट है। क्या परमेश्वर को तुमसे भीख मांगनी पड़ेगी, जैसे भिखारी खाने के लिये भीख मांगता है? हम यह भूल जाते हैं कि हमारा परमेश्वर कितना महान है ओर उसमें कितनी शक्ति समाई है। शायद ही कोई मसीह परिवार हो जो उसे अपने घर में आने देना चाहता हो। जब तक तुम परमेश्वर के प्रेम भरे हाथ का रहस्यमय काम अपने जीवन में नहीं देखोगे, तुम उसके आभारी नहीं होगे। चाहे तुम हजारों के बीच में हो, उसकी आँखें तुम पर लगीं हैं। यदि मूसा ने परमेश्वर की योजना के सम्मुख समर्पण नहीं किया होता तो वह एक साधारण मिद्दानी की भाँति मर गया होता।

विश्वास द्वारा अपनी जवानी के दिनों नें अपने शरीर के पापमय स्वभाव पर विजय पाओ। परमेश्वर को मूसा से बारबार विनती करनी पड़ी। एक ओर छह लाख लोग कष्ट झेल रहे थे और दूसरी ओर एक नौजवान अपने शांतिमय जीवन, सुखी परिवार में सन्तुष्ट था। उसके पास कई हजार भेड़ थीं, एक गुणी पत्नी और खुशी से भरने के लिये दो बच्चे। उसके पास खाने के लिये भरपूर माँस और पीने के लिए दूध था और उसका जीवन शांतिमय और सुखी बीत रहा था। उसे इस बात का ज्ञान नहीं था कि उन लोगों को छुड़ाने वाले परमेश्वर की शक्ति कितनी महान है। मरकुस '१२-२४ यीशु ने उनसे
कहा,' क्या तुम इस कारण भूल में नहीं पड़े हो कि तुम न तो पवित्रशास्त्र को समझते हो और न ही परमेश्वर के सामर्थ्य को' यदि तुम बाइबल को जानो तो तुम समझोगे कि तुम्हारा परमेश्वर कितना शक्तिमान है। आओ अब यीशु को एक हाथ की दूरी पर विनती करता हुआ न छोड़ें।
- स्वर्गीय एन दानियल।

'चाइना इन्लैण्ड मिशन का जन्म।'

सन् १८६० में जब हड्सन और मारिया ने अपना बचा हुआ थोड़ा सा सामान बांध कर स्टोर में रखा और नन्ही ग्रेसी(उनकी बिटिया) को लपेटे हुए जहाज पर इंग्लैण्ड के लिये रवाना हुए। उन्हें इस बात का अनुमान भी न था कि लगभग छह साल बीत जाएँगें, इससे पहले कि वे अपने प्यारे चीन वापस आयें। उन्हें यह सोच कर खुशी हो रही थी कि वे अपने मित्रों और रिश्तेदारों से इंग्लैण्ड में मिलेंगें लेकिन साथ ही उनका ध्यान और मन शंघाई, निंगपो और ऐसे चीनी शहरों की ओर लगा था, जहाँ उनकी सेवकाई उन्हें ले गई थी। वह अपनें घर इंग्लैण्ड अपना स्वास्थय सुधारने के लिये और दूसरों से उनके साथ चीन में मसीह सुसमाचार के प्रचार का काम करने की अपील करने के लिये जा रहे थे। एक दूसरे के प्रति बिना किसी कड़वाहट के हड्सन, चीनी इवैनजलाईजेसन सोसायटी, जिसने

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE
By Email:
lefipost@mailandnews.com
At our Web Site:
http://lefi.org

उसे आरंभ में भेजा था, अलग हो गए थे।

इस सोसायटी का काम, इसकी कड़ी प्रक्रिया और संकुचित होने के कारण केवल तटीय शहरों तक सीमित था। हड्सन और मारिया के मन पर अन्दरूनी चीनी इलाकों में मसीह धर्म का प्रचार करने का गहरा बोझ था।

उनका समय इंग्लैण्ड में अच्छा बीता। एक चीनी मसीह के साथ, जो यात्रा में उनके साथ आया था, मिलकर हड्सन चीनी भाषा में बाइबल के 'नये नियम' का एक और संस्करण तैयार कर रहा था। उसे चीन की आत्मिक ज़रूरतों पर अनेक लेख लिखने के लिए कई निमन्त्रण मिले। वह इस बात से काफी खुश था कि उसके यह लेख और चीन की चर्चा, लोगों में चीन में छूटे हुए अधूरे काम के प्रति ज़रूर कुछ रुचि पैदा करेंगें। उन वर्षों में, पांच कर्मियों का चुनाव किया गया और वे चीन के लिये समुद्री यात्रा पर रवाना हुए हालाँकि स्वंय टेलर परिवार वापस नहीं जा पाया। इन वर्षों में हड्सन और मारिया के परिवार में तीन और बेटे पैदा हुए।

१८६५ में, इन सब भागों में प्रगति होने के बावजूद, इंग्लैण्ड में पांच लम्बे साल रहने के बाद,हड्सन यह बात सोच कर निराश हो रहा था कि क्या चीन की आत्मिक आवश्यकता को पूरी करने के लिये क्या कभी पर्याप्त मिशनरि तैयार होगें? चीन में प्रोटेसटेन्ट मिशनरियों की संख्या बढ़ने की बजाय हर साल कम हो रही थी। और जो वहाँ बचे हुए थे, उन्होंने अपने को तटीय शहरों तक सीमित कर रखा था। बहुत ही कम देश के भीतरी इलाकों में जाने का प्रयास करते थे।

मरिया न कुछ कर पाने की स्थिति में, अपने पति को हताश होता हुआ देख रही थी। उसने अपने पति को धीमे से कई तरीकों से संकेत भी किया कि यदि वह अपने मन का बोझ उससे कहना चाहे तो वह बड़ी खुशी से उसे सुनेगी। लेकिन ऐसा लग रहा था कि समय बीतते, वह अधिक से अधिक बात अपने तक ही सीमित रखे हुए था। कई महीनों तक, वह रात में केवल एक घण्टा ही सो पा रहा था।

मारिया ने इस बात का ध्यान रखा कि उनके चार नन्हें बच्चे अपने पिता को अधिक तंग न करें और घरेलू काम में जहाँ तक संभव होता खुशी-खुशी लगी रहती।

जब उन्हें इंग्लैण्ड के तटीय शहर, ब्राइटन में कुछ समय बिताने का निमन्त्रण प्राप्त हुआ, मारिया खुशी से झूम उठी। उसे लगा कि हडसन को केवल इसी की आवश्यकता थी।

जैसे ही वे ब्राइटन पहुँचे, नन्हीं ग्रेसी(उनकी बिटिया) किलकारी भरती हुई समुद्री रेत पर दौड़ने लगी। 'पापा-पापा कृपया मुझे पानी में खेलनें के लिये ले चलो।'

अपनी प्यारी बिटिया की बात सुनकर हडसन मुस्कुराना न रोक सका। लेकिन उस समय वह अपने बच्चों के साथ पानी में खेलने के लिये तैयार न था। अपनी बच्ची के कोमल बालों में हाथ फेरते हुए बोला, 'ग्रेसी, इसके लिये हमारे पास प्रयाप्त समय होगा। अभी पापा, अकेले सैर करना चाहते हैं। क्या तुम्हें यह मंज़ूर है ?'

वह सूरज की रोशनी से भरी रविवार की सुबह थी। हडसन ने अपने जूते-मोजे निकाले और पैंट को नीचे से मोड़कर ऊपर कर लिया। चलते हुए उसके पैरो की अंगुलियों और अंगूठों के बीच से दलदली समुद्री रेत रिस रही थी, हल्की लहरें वापस बहते हुए उस रेत को धो रहीं थीं। वह एक आदर्श, शांतिपूर्ण दृश्य था - सिवाय इसके कि हडसन मन में अशांत था। यहाँ तक कि ब्राइटन आना भी उसके भीतरी संताप को कम न कर सका। उसके कदम तेजी से बढ़ने लगे और वह समुद्र के किनारे दौड़ने लगा।

बार-बार वह अपने को यह याद दिला रहा था कि उसके पास चीन में मिशनरि भेजने के लिए और उनकी ज़रूरतें पूरी करने के लिये पैसे नहीं हैं। यदि वह लोगों को जाने के लिये कहे और वे खतरों का सामना करें, यहाँ तक कि भुखमरी का। क्या यह न्यायसंगत होगा ?

वह जानता था कि वह इतना बिमार था कि रेत में दौड़ना उसके लिये गलत था। यदि मारिया ने उसे दौड़ते देखा तो वह ज़रूर उसे झिड़केगी। फिर भी वह चलता गया, उसके मन में यह विचार तेजी से घूम रहे थे। यदि मिशनरि भूखे भी मर जाएँ, वे सीधे स्वर्ग सिधारेंगें। और यदि एक भी चीनी व्यक्ति ने उद्धार पाया, क्या यह त्याग फलदायक न होगा? लेकिन क्या वह मिश्नरियों से ऐसे बलिदान की अपेक्षा कर सकता है ?

थके हुए हडसन ने आराम के लिये, रेत में धसें हुए लकड़ी के फट्टे का सहारा लिया। सूरज अपने पूरे तेज पर था। उसने अपनी आँखों को बन्द करते हुए सिर को पीछे की और झुकाया। दिन की गरमाईश उसकी त्वचा को छू रही थी और उसे लगा कि अपनी नींद की ज़रूरत के आगे झुक कर सो जाएगा।

अचानक वह सीधे उठ बैठा। यदि ये मिशनरि चीन गए, तो वे इस कारण चीन नहीं जाऐंगे कि हडसन ने उन्हें भेजा है। बल्कि इस लिये कि परमेश्वर ने स्वंय उन्हें जाने की आज्ञा दी है। वहाँ कोई न था जो उसकी आवाज़ सुन सके, रेत में बैठे हुए हडसन जोर से बोला, 'क्यों, यदि हम परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर रहे हैं तो हमारी जिम्मेवारी परमेश्वर की है, हमारी नहीं !'

आकाश की ओर हाथ उठाते हुए उसने उपर देखा, 'हे प्रभु यह बोझ तेरा है। तेरा सेवक होने के नाते मैं काम जारी रखूँगा, उसके फल को तेरे हाथ में सौंपता हूँ।'

हडसन ने बेहद राहत महसूस की। बोझ अब उसके कंधों पर न था। वह कभी भी उसका नहीं था। जो पाँच मिशनरि चीन गए हैं वे हडसन के लिये काम नहीं कर रहे बल्कि स्वंय परमेश्वर के लिये कर रहे हैं। चीन में मसीह सुसमाचार के प्रचार का दृढ़ विश्वास उसका अपना नहीं था बल्कि उसने स्वंय परमेश्वर से पाया था।

समुद्र की लहरें उसके पैरों से टकरा रही थी, सूर्य की किरणें कंधों पर पड़ रही थी, हडसन ने अपनी जेब से कलम और बाइबल निकाली। उसने पन्ने का खाली छोर ढूँढ़ा और लिखा, २४ तैयार और निपुण सेवकों के लिये जून २५, १८६५ में प्रार्थना की। २४ मिशनरी, जो अभी गए थे, उन्हें मिलाकर, दो-दो देश के सूदूर इलाकों में काम करेंगें।

नयी सामर्थ के साथ, हडसन रेत में लम्बे कदम भरता हुआ ब्राइटन में अपने घर की ओर बढ़ा, जहाँ उसके मित्र और परिवार जन प्रतीक्षा कर रहे थे। जैसे ही मारिया की नज़र उस पर पड़ी वह भांप गई कि ज़रूर कोई बड़ी महत्वपूर्ण घटना घटी है। उस रात, वे देर तक जाग कर उत्साह से भरे इस अनुभव के बारे में कि चीन में परमेश्वर के काम पर और उनके घर पर क्या असर होगा, बातें करते रहे।

सुबह उठते ही पहला काम हडसन ने यह किया कि वह लंदन शहर गया और थोड़े से धन के द्वारा बैंक में 'चाइना इन्लैण्ड मिशन ' के नाम पर खाता खोला।

अपने लक्ष्य से प्रेरित होकर कि एक टोली के साथ जो चीन के अन्दरूनी इलाकों में पहुँच कर कार्य करे न की अधिक सुरक्षित तटीय शहरों में बस जाए। मारिया और हडसन लगभग एक साल और इंग्लैण्ड में रहे। हडसन मे एक असरदार 'चीन की आत्मिक आवश्यकताएँ और दावा' नामक पुस्तक लिखने का काम पूरा किया, जो कि काफी लोगों का ध्यान इसके उद्देश्य की ओर आकर्षित कर सकी। साधारण तौर पर खोले गये बैंक खाते की जमा-पूंजी लोगों के उदार योगदान द्वारा इतनी तेजी से बढ़ने लगी कि कोई उसकी कल्पना नहीं कर सकता।

२६ मई, सन १८६६, टेलर परिवार अपने चार बच्चे, एक दंपत्ति परिवार, पाँच अविवाहित पुरुष और नौ कुँवारी युवतियों के साथ 'लेमम्रमुइर' नामक जहाज़ पर चीन के लिये एक बार फिर रवाना हुआ।

'चाइना इन्लैण्ड मिशन' का उदय, ब्राइटन के एक उज्जवल दिन हुआ।

-- उद्धत किया गया 'हडसन टेलर', सूसन मारटिंस। प्रकाशन किया गया - बारबार पबलिशिंग इनं., उरिशविल, ओहायो, १९९३, अमेरिका।

'प्रेरितों का उदाहरण - प्रार्थना द्वारा सामर्थ'

मुझे ऐसे सौ प्रचारक दो, जो पाप के अलावा किसी से न डरते हों और परमेश्वर के अलावा कोई और इच्छा न रखते हों, और मुझे इसकी तनिक मात्र परवाह नहीं, चाहे वे सधारण लोग हों या शिक्षित पादरी वर्ग के। केवल ऐसे ही नरक की नींव हिला सकते हैं और धरती पर स्वर्गीय राज्य स्थापित कर सकते हैं। परमेश्वर प्रार्थना पूरी करने का अलावा कोई और कार्य नहीं करता - जोन वैसली।

प्रेरितों को अपनी सेवकाई में प्रार्थना की आवश्यकता तथा महत्व का पूरा ज्ञान था। वे जानते थे कि प्रेरितपन का उच्चाधिकार उन्हें प्रार्थना की ज़रूरत से छुटकारा दिलवाने की बजाय और अधिक ज़रूरत महसूस करवाता था। उन्हें इस बात का अत्याधिक ध्यान रहता था कि कोई और ज़रूरी काम उनके प्रार्थना के समय को न छीन ले और कहीं ऐसा न हो कि जिस प्रकार उन्हें प्रार्थना करनी चाहिए, वे न कर पाएँ। इसलिये उन्होंने साधारण वर्ग से इन संवेदनशील कार्यों और गरीबों की सेवा की जिम्मेवारियों के लिये लोगों को चुना। ताकि वे(प्रेरित) बिना रुकावट के 'प्रार्थना में और वचन के प्रचार की सेवा में लग सकें।' प्रार्थना को पहला स्थान दिया गया है। उनके प्रार्थना के साथ संबंध को अधिक जोर दिया गया है 'अपने को लगाना', उसे अपना व्यापार बनाना, प्रार्थना के आगे समर्पण, भरपूर जोश के साथ, अति आवश्यक, धैर्य और समय लगाना।

कैसे धर्मी प्रेरितों ने प्रार्थना के दिव्य काम में अपने को पूर्णतया अर्पित कर दिया। 'दिन-रात अत्याधिक प्रार्थनाएँ।' पौलुस कहता है, 'हम दिन-रात अपने को प्रार्थना में लगाए रहेंगें' एकमत होकर प्रेरितों ने अपने को अर्पित किया। परमेश्वर के जनों के लिए कैसे इन नये
नियम के समकालीन प्रचारकों ने अपने आप को प्रार्थना में लगाया। किस प्रकार प्रार्थनाओं द्वारा उन्होंनें परमेश्वर की सामर्थ को पूरी शक्ति से कलिसिया में भर दिया। इन पवित्र प्रेरितों ने इस बात की खोखली कल्पना नहीं की, कि केवल परमेश्वर के पवित्र वचन के प्रचार के उच्च एँव परमपावन कर्तव्य को पूरा करना ही काफी है। लेकिन उनके उपदेश लोगों के मन में घर करते थे, जिसका कारण उनका पूरा मन लगाकर प्रार्थना करना है। प्रेरितों की प्रार्थना, थकानेवाली, मेहनत के काम की भाँति थी, ठीक प्रेरितों के प्रचार की भाँति। प्रेरितों ने अपने लोगों के विश्वास और पवित्रता को उच्चतम् स्तर तक उठाने के लिए, दिन-रात पूरी सामर्थ से प्रार्थना में लगाए। और अधिक प्रार्थना की कि वे उस उच्च आत्मिक ऊँचाई पर बने रहें। जिस प्रचारक ने मसीह के विधालय में, अपने लोगों और परमेश्वर के बीच विनती हेतू मध्यस्था की उच्च एँव दिव्य कला नहीं सीखी, वह कभी भी प्रचार की कला नहीं सीख पाएगा, चाहे उसमें प्रवचन शास्त्र भारी मात्रा में क्यों न भरा हो और चाहे उसमें प्रवचन तैयार करने की और उपदेश देने की श्रेष्ठ प्रतिभा ही क्यों न हो।

प्रेरित स्वरूप पवित्र पथप्रदर्शकों की प्रार्थनाएँ, साधारण लोगों को प्रेरित, संत स्वरूप बनने में सहायक होती है। यदि बाद के वर्षों में कलिसिया के अगुवे प्रेरितों की भाँति अपने लोगों के लिए प्रार्थना करने में उतने ही सावधान और जोशीले होते तो, वे दुःखद सांसारिकता और विधर्म से भरे समय, इतिहास को न बिगाड़ते और महिमा पर ग्रहण न लगता और कलिसिया के विस्तार में रुकावट न पड़ती। प्रेरितस्वरूप प्रार्थानाएँ, प्रेरितस्वरूप संत तैयार करती हैं और कलिसिया प्रेरित काल समरूप पवित्र एँव शक्तिशाली बनती।

कैसा आत्मा का उत्थान, कैसी पवित्रता और कैसा उद्देश्य का उत्थान, कैसी निस्वार्थता, कैसा आत्म-बलिदान, कैसी कठोर मेहनत, कैसी जोश भरी आत्मा, कैसा दिव्य व्यवहार-कौशल, मनुष्य और परमेश्वर की मध्यस्था का अपेक्षित गुण है।

प्रचारक को अपने लोगों के लिये प्रार्थना में, न्यौछावर कर देना
चाहिए। न केवल इसलिए कि उनका साधारण उद्धार हो बल्कि महान सामर्थी उद्धार हो। प्रेरितों ने अपने को प्रार्थना में तल्लीन कर दिया था कि संत सिद्ध हो जाएँ। यही नही कि उनमें परमेश्वर की बातों के लिए थोड़ी और रुचि बढ़ जाए, बल्कि वे परमेश्वर की पूर्णता से भर जाएँ। यह पाने के लिये पौलुस ने केवल अपने प्रचार पर भरोसा नहीं किया लेकिन 'इस उद्धेश्य के लिए प्रभु यीशु मसीह के पिता के सम्मुख प्रार्थना में घुटने टेके।'

पौलुस के प्रचार की बजाए, पौलुस की प्रार्थनाएँ, उसकी जीती हुई आत्माओं को संतित्ता के महामार्ग पर आगे तक ले गयीं। इपफ्रास ने भी ऐसा ही किया और उसके प्रचार की बजाए उसकी प्रार्थनाएँ कुलुसियों के संतों को आगे बढ़ा रहीं थीं। उसने जोश के साथ उनके लिए प्रार्थना में मेहनत की कि वे '..परमेश्वर की समपूर्ण सिद्ध इच्छा में खड़े रहें और पूर्ण हों।..'

प्रचारक अधिक तौर पर परमेश्वर द्वारा चुने हुए अगुवे होते हैं। प्रधान रूप से कलिसिया की परिस्थिति के लिए, वे ही जिम्मेदार हैं। वे ही इसके चरित्र को बनाते हैं, इसके स्वारथ्य और जीवन को दिशा देते हैं।

हर प्रकार से इन अगुवों पर काफी कुछ निर्भर करता है। वे संस्थाओं और उनके समय को सुगठीत करते हैं। कलिसिया दिव्य है, इसका खजाना स्वर्गीय है, लेकिन इस पर मनुष्य की मुहर लगी है। मिट्टी के पात्रों में यह खजाना भरा है और वह पात्र को छूता है। परमेश्वर की कलिसिया इसके अगुवों से बनती है या बनाई जाती है, वह वैसी ही होगी जैसे उसके अगुवे।

आत्मिक, यदि अगुवे आत्मिक हैं, धर्मविरोधी, यदि इसके अगुवे अपवित्रता को बीच नें

Free On-Line
subscription
Would you like an On-Line sub-scription to the ***"Christ is Victor"?***
Please visit our web site at:
LEFI.org.

सत्य की परख!

नीति वचन २९-१८
'ईश्वरीय प्रकाशन के अभाव में लोग अराजक हो जाते हैं...। '

मिलाए हों। इस्राएल के राजाओं ने इस्राएल की धार्मिकता को चरित्र दिया। कलिसिया शायद ही कभी अपने अगुवों के विरुद्ध विद्रोह करती है या अगुवों की धार्मिकता से ऊपर उठती है। शक्तिशाली आत्मिक नेता, पवित्रता की सामर्थ पाए व्यक्ति जब अगुवे हों, यह परमेश्वर के अनुग्रह का चिन्ह है। घोर विपत्ति, कमजोरी और सांसारिकता, कमजोर अगुवों के पीछे आती है। इस्राएल बहुत नीचे गिरा, जब किशोर राजकुमारों और शिशुओं ने उस पर राज किया। जब शिशुओं ने दमन किया और स्त्रियों ने राज, तब भविष्यदवक्ताओं ने अच्छी स्थिति की भविष्यवाणी नहीं की। आत्मिक अगुवाई के समय कलिसिया की आत्मिक उन्नति होती है।

सामर्थी आत्मिक नेतृत्व का विशिष्ट स्वभाव 'प्रार्थना' है। प्रार्थनामय व्यक्ति, सामर्थी व्यक्ति हैं, जो समय को बदलते हैं। परमेश्वर की सामर्थ उन्हें विजय के मार्ग पर ले जाती है।

कैसे वह व्यक्ति परमेश्वर के वचन का प्रचार कर सकता है, यदि उसने प्रार्थनामय होकर, वह संदेश परमेश्वर से न पाया हो ? अपने विश्वास के बढ़ाये बिना कैसे वह प्रचार कर सकता है, बिना दूरदर्शिता के उसका ह्रदय परमेश्वर की उपस्थिति द्वारा स्नेह से न भरा गया हो ! हाय, उन होठों पर जिन्हें प्रार्थना की अग्नि ने छूआ न हो। वे हमेशा, नीरस और जोश रहित रहेंगे और दिव्य सत्य कभी भी सामर्थ से उनके मुख से नहीं निकलेगा। जहाँ तक धर्म के सच्चे हित का संबंध है, 'प्रार्थना' रहित प्रवचन मंच सदा फलरहित रहेगा।

एक प्रचारक बिना प्रार्थना किये, प्रचार एक काम की तरह, मनोरंजन या विद्वान की भाँति कर सकता है, लेकिन इस प्रकार के प्रचार और प्रार्थनामय पवित्र हाथों द्वारा परमेश्वर के वचन के आंसुओं सहित बोने के बीच ऐसी दूरी है जो नापी नहीं जा सकती।

एक प्रार्थना रहित सेवा, परमेश्वर के सत्य और कलिसिया की अंत्येष्टि प्रबन्ध है। वह चाहे मंहगे से मंहगीं अर्थी की पेटी क्यों न हो और अत्याधिक मनोहर फूलों से क्यों न लदी हो लेकिन वह फिर भी शवयात्रा है। चाहे चमकदार कपड़ों से लदी हो। एक प्रार्थना रहित सेवकाई कभी भी लोगों को परमेश्वर का सत्य नहीं सिखा पाएगी। सहस्राब्दिक महिमा का समय, प्रार्थनारहित कलिसिया ने खो दिया है। कलिसिया के प्रार्थना रहित होने के कारण हमारे प्रभु का पुनःआगमन अनिश्चित समय के लिये स्थगित हो गया है। नरक ने अपने को और फैला लिया है और अपनी भयानक गुफाओं को प्रार्थनारहित कलिसिया की मृत अराधना सभाओं के समय भर लिया है।

सर्वोत्तम एँव सर्वोच्च भेंट, 'प्रार्थना' की भेंट है। यदि बीसंवी शताब्दी के प्रचारक प्रार्थना के पाठ को भलीभाँति सीख लें और प्रार्थना की शक्ति का पूरा उपयोग करें तो स्हस्राब्दी की दोपहर, शताब्दी के अंत से पहले आ जाऐगी।

'बिना रूके प्रार्थना में लगा रह', यह बीसवीं शताब्दी के प्रचारक के लिए नरसिंहे की घोषणा है। यदि बीसवीं शताब्दी उनके पाठ, उनके विचार, उनके शब्द और उनके संदेश को प्रार्थनाकक्ष में पाऐगी, अगली शताब्दी अपने को नई धरती, नए स्वर्ग में पाऐगी। प्रार्थनामय सेवकाई की शक्ति द्वारा, वह पुराने , पाप का दाग लिए, पाप के ग्रहण लगे, धरती और स्वर्ग मिटा दिये जाऐंगे।

- इ एम बाउण्ड।

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दिजिए।